शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-4.0
Vol.-3; issue-2 (April-June) 2026
Page No- 98-102
DOI :-10.71037/Shodhaamrit.v3i2.16
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :

1. चोखराज
शोधार्थी, संस्कृत विभाग, हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़.

2. डॉ. देवेन्द्र सिंह राजपूत
सहायकाचार्य, संस्कृत विभाग, हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़.

Corresponding Author :

चोखराज
शोधार्थी, संस्कृत विभाग, हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़.

भारतीय ज्ञान परंपरा, नैतिक शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : एक समालोचनात्मक अध्ययन

सारांश : भारतीय ज्ञान परंपरा प्राचीन काल से ही मूल्याधारित, समग्र एवं समावेशी शिक्षा की पोषक रही है। गुरुकुल प्रणाली, वेद, उपनिषद, बौद्ध एवं जैन शिक्षा दर्शन ने व्यक्ति के बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक विकास पर विशेष बल दिया। हाल ही में लागू की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इन्हीं परंपरागत भारतीय मूल्यों को आधुनिक वैश्विक आवश्यकताओं के साथ समन्वित करने का एक सार्थक प्रयास है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) भारत की शिक्षा व्यवस्था में एक युगांतकारी परिवर्तन का एक महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को केवल रोजगारपरक न बनाकर मूल्यपरक, संस्कृति-आधारित और समग्र मानव विकास से जोड़ना है। वेद, उपनिषद, दर्शन, योग, आयुर्वेद तथा गुरु-शिष्य परंपरा में निहित भारतीय ज्ञान परंपरा शिक्षा को आत्मबोध, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ती रही है। प्रस्तुत शोधपत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख तत्त्वों का विश्लेषण करते हुए यह अध्ययन किया गया है कि NEP 2020 किस प्रकार प्राचीन भारतीय शैक्षिक दर्शन को आधुनिक संदर्भ में पुनर्स्थापित करती है।

यह शोधपत्र **भारतीय ज्ञान परंपरा, नैतिक शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : एक समालोचनात्मक अध्ययन** यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि नीति भारतीय शिक्षा की जड़ों को पुनः सशक्त करने की क्षमता रखती है, बशर्ते इसका प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए।

पारिभाषिक शब्द : भारतीय ज्ञान परंपरा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, संस्कृत ग्रंथ, समग्र शिक्षा, मूल्यपरक शिक्षा, गुरुकुल परंपरा।

1. प्रस्तावना : भारतीय शिक्षा परंपरा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध परंपराओं में से एक रही है। भारतीय परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल भौतिक संशाधनों के योग्य बनना नहीं है बल्कि व्यक्ति के आध्यात्मिक, नैतिक एवं सामाजिक उन्नयन को सुनिश्चित करना रहा है । उपनिषदों में शिक्षा को "आत्मज्ञान" तथा "मुक्ति" का माध्यम माना गया है। इसी कारण भारतीय संस्कृति में कहा गया है - **"सा विद्या या विमुक्तये"**[1] अर्थात् वह विद्या ही वास्तविक है जो मनुष्य को अज्ञान एवं बंधनों से मुक्त करे।

भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत का मूल आधार ही भारतीय ज्ञान परम्परा है। भारतीय ज्ञान परम्परा भारतवर्ष में प्राचीन काल से बली आ रही शिक्षा प्रणाली है। इसके अंतर्गत वेद, वेदांग, उपनिषद, श्रुति, स्मृति से लेकर विभिन्न प्रकार के दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, नाट्यशास्त्र, प्रवन्धन एवं विज्ञान विद्याशाखा इत्यादि के अथाह ज्ञान भण्डार हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा के अंतर्गत शिक्षा को विद्या, ज्ञान, दर्शन, प्रबोध, प्रज्ञा, वागीशा एवं भारती इत्यादि शब्दों से परिभाषित किया गया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली के स्वर्णिम इतिहास का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि प्राचीन समय में इस परम्परा का अभीष्ट उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति करते हुए विद्यार्थी के व्यक्तिव का सर्वांगीण विकास करना तथा उसे समाजोपयोगी एवं मोक्षगामी बनाना था। भारतीय ज्ञान परम्परा प्रज्ञा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान एवं विज्ञान, लौकिक एवं पर-लौकिक, कर्म एवं धर्म तथा भोग व त्याग का अद्भुत समन्वय रहा है। इस प्रकार प्राचीन समय से ही शिक्षा के प्रति भारतीय ज्ञान परम्परा का दृष्टिकोण अत्यन्त व्यापक एवं सूक्ष्म रहा है। वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अन्तर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा के अध्ययन-अध्यापन में विशेष बल दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 भारत के सनातन ज्ञान एवं विचारों के समृद्ध आलोक में निर्मित की गयी है। इसके आधार स्तंभों में भारतीय ज्ञान परम्परा को भी केंद्रीय स्तम्भ माना गया है। इस दिशा में नयी पीढ़ी को भारतीय ज्ञान परम्परा से जोड़ने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अभिनव पहल की है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक अनुशासन विषय की पाठ्यचर्या में भारतीय ज्ञान परम्परा से सम्बन्धित ऐसे संप्रत्ययों को जोड़ा जा रहा है जिनके अध्ययन द्वारा निश्चित रूप से नयी पीढ़ी के विद्यार्थियों में भारतीय होने का गौरवबोध जागृत होगा।

2. शोधपत्र के उद्देश्य : **प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :**

1. भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा एवं उसके शैक्षिक दर्शन का सैद्धांतिक अध्ययन करना।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख प्रावधानों का विश्लेषण करना।
3. यह अध्ययन करना कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा के तत्त्व किस रुप में प्रतिबिंबित होते हैं।
4. भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा के समन्वय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका का मूल्यांकन करना।
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से मूल्यपरक, समग्र एवं नैतिक शिक्षा की संभावनाओं का विश्लेषण करना।
6. भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की चुनौतियों एवं सीमाओं की पहचान करना।

3. शोधप्रविधि : प्रस्तुत शोधपत्र में **गुणात्मक, दार्शनिक तथा विश्लेषणात्मक शोध विधि** का अनुसरण किया गया है। यह शोध राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का **भारतीय ज्ञान परंपरा के आलोक में वैचारिक, सैद्धांतिक एवं समालोचनात्मक अध्ययन** प्रस्तुत करता है।

4. भारतीय ज्ञान परम्परा : भारतीय ज्ञान परम्परामें तीन शब्दों का समुच्चय है: **भारतीय ज्ञान प्रणाली**। **'भारतीय'** शब्द अखंड भारत अर्थात् अविभाजित भारतीय उपमहाद्वीप को संदर्भित करता है। **'ज्ञान'** शब्द से तात्पर्य है आत्मा परमात्मा सम्बन्धी अभेद का बोध, परम तत्त्व का ज्ञान। भारतीय परंपरा में कहा गया है - **न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते**[2] अर्थात् यहाँ ज्ञान को सबसे पवित्र माना गया है। यहाँ **परम्परा** ज्ञान को जीवित रखने की एक ऐसी व्यवस्था जिसमें गुरु अपने शिष्य को ज्ञान सौंपता है (गुरु-शिष्य परंपरा)। यह बिना रुके सदियों से चली आ रही एक अटूट श्रृंखला है।

भारतीय ज्ञान परंपरा एक समृद्ध और प्राचीन धारा है, जो न केवल धार्मिक या सांस्कृतिक दृष्टिकोण से विशेष स्थान रखती है, बल्कि यह जीवन के हर पहलू-विज्ञान, दर्शन, चिकित्सा, कला और समाजशास्त्र आदि में भी गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा के चलते भारत का अतीत बहुत गौरवशाली रहा है। भारत सरकार ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को पाठ्यक्रम में एकीकृत करने के लिए नई शिक्षा नीति 2020 के तहत एक बड़ा क़दम उठाया है।

5. भारतीय ज्ञान परंपरा : दार्शनिक आधार : वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, षड् वेदाङ्ग, रामायण, महाभारत, भगवद्गीता, बौद्ध एवं जैन साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा के आधारभूत स्तम्भ हैं। भारतीय दर्शन के आस्तिक नास्तिक सम्प्रदायों में इस परंपरा का सार समाया हुआ है। भारतीय दर्शन के सभी सम्प्रदाय एवं मार्ग मनुष्य को दुःखों से निवृत्त कर परम पुरुषार्थ मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करते हैं। यहाँ मुक्ति को जीवन का चरम लक्ष्य बताया गया है एवं आध्यात्मिक सुख ही श्रेष्ठ सुख है। भारतीय परंपरा में शिक्षा को केवल सूचना प्राप्ति नहीं जैसा कि आज के समय में प्रचलन चल रहा है बल्कि आत्मविकास का उत्तम साधन माना गया है।

6. समग्र शिक्षा की अवधारणा : तैत्तिरीय उपनिषद् में कहा गया है– **"सत्यं वद । धर्मं चर । स्वाध्यायान्मा प्रमदः॥"**[3] अर्थात् सत्य बोलो, धर्म का पालन करो तथा स्वाध्याय में प्रमाद मत करो।

यह श्लोक स्पष्ट करता है कि भारतीय शिक्षा का उद्देश्य नैतिकता, आत्मअनुशासन एवं ज्ञानार्जन था। NEP 2020 भी इसी प्रकार मूल्यपरक शिक्षा पर बल देती है।

7. गुरु-शिष्य परंपरा : भारतीय शिक्षा प्रणाली गुरु एवं शिष्य के आत्मीय संबंध पर आधारित थी। उपनिषदों में गुरु को ज्ञान का प्रकाशक कहा गया है– **गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।**

गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥[4]

यह श्लोक गुरु की सर्वोच्च महत्ता को स्थापित करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी शिक्षक को "राष्ट्र निर्माण का आधार" माना गया है।

8. नैतिक एवं मूल्यपरक शिक्षा : भारतीय शिक्षा दर्शन में नैतिकता को केंद्रीय स्थान प्राप्त है। महाभारत में कहा गया है-**"न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते॥"**[5] अर्थात् इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र कुछ भी नहीं है। NEP-2020 विद्यार्थियों में संवैधानिक मूल्य, नैतिकता, सहिष्णुता एवं कर्त्तव्यबोध विकसित करने पर बल देती है।

9. योग एवं भारतीय जीवन-दर्शन : पतंजलि योगसूत्र में कहा गया है – **"योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः॥"**[6] अर्थात् चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में योग, ध्यान एवं मानसिक स्वास्थ्य को शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग बनाया गया है।

10. भारतीय शिक्षा दर्शन एवं आधुनिकता का समन्वय : ईशोपनिषद् में कहा गया है -

"विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।

अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते॥"[7]

अर्थात् जो व्यक्ति विद्या एवं अविद्या दोनों का सम्यक ज्ञान प्राप्त करता है, वही पूर्णता प्राप्त करता है। यह श्लोक आधुनिक विज्ञान एवं पारंपरिक ज्ञान के समन्वय की आवश्यकता को स्पष्ट करता है। NEP 2020 भी भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक तकनीकी शिक्षा के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है।

11. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परम्परा की अनिवार्यता की आवश्यकता : प्राचीन गौरवमयी भारतीय ज्ञान परम्परा सम्पूर्ण विश्व को आलोकित करने वाली है। प्राचीन भारतीय कला के साक्ष्य चारों वेदों, उपवेदों, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, वेदांग, श्रुति, स्मृति से लेकर रामायण, महाभारत, पुराण एवं श्रीमदभगवद्गीता में विद्यमान हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा जो वैदिक एवं उपनिषद काल से लेकर ग्रन्थों, टीकाओं, भाष्यों के रूप में बाद में भी प्रवाहित होती रही। इसके अंतर्गत महान गुरु-शिष्य परम्परा के माध्यम से अनेकों वर्षों तक अर्जित ज्ञान को आत्मसात व विश्लेषित कर नए ज्ञान को संश्लेषित किया गया। प्राचीन काल की ज्ञान प्रणाली, परम्पराएँ एवं प्रथाएँ मानवता को प्रोत्साहित करती थीं। आधुनिक युग में प्रचलित भारतीय ज्ञान एवं विदेशों से आ रहीं तथा-कथित नवीन खोज जो हमारे ग्रन्थों में पूर्व से ही उल्लेखित हैं, वह सब भारतीय ज्ञान परम्परा के समृद्धशाली होने प्रमाण है। इस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली वर्तमान परिदृश्य में और भी अधिक प्रासंगिक है, जो व्यक्ति को कर्त्तव्य-बोध, कर्त्तव्यपरायणता, स्थिरता एवं तनाव प्रबंधन इत्यादि के समायोजन हेतु व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ-साथ विविध ज्ञान-विज्ञान, लौकिक एवं पारलौकिक रहस्यों को समझने के लिए परिशुद्ध अनुदेशन का कार्य करती है। इसमें निहित वेद एवं उपनिषद, दर्शन एवं प्रबन्धन, ज्ञान एवं

विज्ञान, धर्म एवं कर्म तथा योग एवं अर्थ से सम्बन्धित विशाल ज्ञान भण्डार का अनुप्रयोग विश्व कल्याण एवं मानवता के उद्धार हेतु किया जा सकता है। अतः अब समय है कि भारतवर्ष के वर्तमान अमृत काल में भारत द्वारा विश्व को दिए गए ज्ञान का संवर्धन किया जाए तथा भारतवर्ष के प्रत्येक नागरिक को भारत की मूल संस्कृति एवं प्राप्त ज्ञान से जोड़ा जाए।

12. भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की भूमिका : भारतवर्ष की ज्ञान परम्परा वर्तमान समय में विमर्श के केंद्र में है क्योंकि केंद्र सरकार की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने भारत के सांस्कृतिक मूलाधारों को ठीक से जानने व समझने पर बल दिया है। इसके अंतर्गत पारम्परिक ज्ञान, कला, कौशल एवं मूल्यों कोशिक्षा से जोड़ने एवं उसके नवीन प्रयोगों के लिए संस्तुति दी गयी है। चूँकि भारत में समग्र एवं बहु विषयक माध्यम से ज्ञान अर्जन की प्राचीन परम्परा रही है। अतः प्राचीन एवं सनातन भारतीय ज्ञान एवं विज्ञान की समृद्ध परम्परा के अनुशीलन में यह शिक्षा नीति शिक्षक प्रशिक्षण, समग्र एवं बहु अनुशासनात्मक शिक्षा एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करती है। इसके कार्यान्वियन हेतु वर्तमान समय में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा प्रकोष्ठ का निर्माण किया गया है. जिसका लक्ष्य स्वदेशी ज्ञान एवं विद्या परम्परा को प्रोत्साहित करना एवं आगे बढ़ाना है। इस दिशा में वर्ष 2020 में क्रियान्वित की गयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इस बात पर बल दिया गया है कि भारतीय ज्ञान परम्परा के विविध संप्रत्ययों को शिक्षा के विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए। इसके लिए वर्ष 2022-2023 के बजट में भारतीय ज्ञान परम्परा के अध्ययन, संवर्धन एवं अनवेक्षण के लिए निर्धारित राशि बढ़ाकर 220 करोड़ कर दी गयी थी। इसके अतिरिक्त वर्ष 2025 तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग 15 लाख अध्यापकों को भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रशिक्षण भी देगा। विश्वविद्यालय के खातक स्तर पर आयोग ने वर्तमान में एक ऑनलाइन पाठ्यक्रम भी आरम्भ किया है। इसके अतिरिक्त अन्य विभित्र ऑनलाइन माध्यमों यथा स्वयं पोर्टल, स्वयंप्रभा, ई-दीक्षा, ज्ञानदर्शन इत्यादि के साथ-साथ मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से भी इसके प्रचार-प्रसार का प्रावधान इसमें किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि भारत को बहुमुखी प्रतिभा वाले वेग्य एवं कुशल विद्यार्थियों के निर्माण के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा को वापस लाने की आवश्यकता है ताकि विद्यार्थियों को उनकी आरंभिक अवस्था से ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के साथ नैतिक व चारित्रिक गुणों से युक्त किया जा सके। यह नीति भारत की समृद्ध विविधता, संस्कृति एवं आवश्यकताओं पर विचार करते हुए भारत के युवाओं, शिक्षक एवं शिक्षार्थियों को सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक व रचनात्मक अधिगम के साथ-साथ परस्पर सहयोग, एकता तथा भ्रातृत्व की भावना के विकास पर बल देती है।

13. निष्कर्ष : इस शोधपत्र में किए गए विश्लेषण से ज्ञात होता है कि वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली के विकास के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की महती भूमिका है। यह विद्यालयी शिक्षा एवं उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों के बहुआयामी विकास हेतु आवश्यक सुधार प्रदान करती है। इसका मुख्य उद्देश्य प्रारंभिक बाल्यावस्था से ही विद्यार्थी की देखभाल करना, शिक्षा संरचना में और अधिक सुधार करना, शिक्षण प्रशिक्षण को और अधिक प्रभावशाली बनाते हुए परीक्षा प्रणाली में सुधार करना एवं प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित ज्ञान को नवीन पाठ्यचर्या में लाना है। इसके लिए यह शिक्षा के 5+3+3+4 प्रारुप को अपनाते हुए विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, चरित्र निर्माण एवं नैतिक मूल्यों के विकास को महत्वपूर्ण मानती है। इसके अंतर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा पर आधारित ज्ञान-विज्ञान एवं दर्शन के समन्वय पर बल दिया गया है। यदि इस शिक्षा नीति का क्रियान्वयन सफल व सुनियोजित रूप से होता है तो यह शिक्षा नीति निश्चित रूप से भारत को वैश्विक पटल में एक नए आयाम में ले आएगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनरुत्थान की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। यह नीति शिक्षा को केवल रोजगार प्राप्ति का माध्यम न मानकर व्यक्ति के समग्र विकास का साधन मानती है। वेद, उपनिषद, भगवद्गीता एवं अन्य संस्कृत ग्रंथों में वर्णित शिक्षा-दर्शन - जैसे सत्य, नैतिकता, आत्मविकास, योग, कौशल एवं लोकमंगल - को नीति में विभिन्न रूपों में समाहित किया गया है। किन्तु नीति की सफलता इसके

प्रभावी क्रियान्वयन पर निर्भर करेगी। यदि भारतीय ज्ञान परंपरा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं आधुनिक आवश्यकताओं के साथ संतुलित रूप में प्रस्तुत किया जाए, तो यह नीति भारत को पुनः "विश्वगुरु" बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

संदर्भ सूची :

1. विष्णु पुराण
2. श्रीमद्भगवद्गीता, 4.38
3. तैत्तिरीयोपनिषद (शिक्षावल्ली, एकादश अनुवाक)
4. स्कन्द पुराण (गुरु गीता)
5. भगवद्गीता (4.38)
6. पतंजलि. योगसूत्र.
7. ईशावास्योपनिषद् (मंत्र 11)

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. **ऋग्वेदः**, सम्पादकः श्रीपाद दामोदर सातवलेकरः, स्वाध्यायमण्डलम्, पारडी।
2. **यजुर्वेदः**, गीताप्रेस, गोरखपुरम्।
3. **सामवेदः**, चौखम्बासंस्कृतसंस्थानम्, वाराणसी।
4. **अथर्ववेदः**, चौखम्बाविद्याभवनम्, वाराणसी।
5. **यजुर्वेदः (शुक्लयजुर्वेदः), शिवसंकल्पसूक्तम्**, अध्यायः 34, मन्त्राः 1–6, सम्पादकः श्रीपाद दामोदर सातवलेकरः, स्वाध्यायमण्डलम्, पारडी।
6. **ईशोपनिषत्**, गीताप्रेस, गोरखपुरम्।
7. **केनोपनिषत्**, चौखम्बाप्रकाशनम्, वाराणसी।
8. **कठोपनिषत्**, गीताप्रेस, गोरखपुरम्।
9. **मुण्डकोपनिषत्**, गीताप्रेस, गोरखपुरम्।
10. **छान्दोग्योपनिषत्**, चौखम्बाविद्याभवनम्, वाराणसी।
11. **बृहदारण्यकोपनिषत्**, चौखम्बाविद्याभवनम्, वाराणसी।
12. **योगसूत्र।** पतञ्जलि। पतञ्जलयोगसूत्रम्। व्यासभाष्य सहित। गीताप्रेस, गोरखपुरम्।
13. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: भारत सरकार।
14. पाण्डेय, रामशंकर. (2018). भारतीय ज्ञान परंपरा: अवधारणा और विकास. वाराणसी: चौखंबा सुरभारती प्रकाशन।
15. शास्त्री, राममूर्ति. (2019). भारतीय शिक्षा परंपरा और आधुनिक संदर्भ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
16. शर्मा, रामकुमार. (2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय ज्ञान परंपरा. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 15(2), 45–60।
17. कुमार, अशोक. (2020). शिक्षा, संस्कृति और राष्ट्र निर्माण. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
18. मिश्र, शिवकुमार. (2021). भारतीय ज्ञान प्रणाली और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा विमर्श, 12(1), 23–34।
19. उपाध्याय, कैलाशनाथ. (2017). प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।
20. सिंह, हरिप्रसाद. (2022). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : एक समालोचनात्मक अध्ययन. समकालीन शिक्षा, 8(3), 10–22।
21. भारतीय शिक्षण मंडल. (2021). भारतीय ज्ञान परंपरा और शिक्षा. नई दिल्ली: भारतीय शिक्षण मंडल।
22. तिवारी, ओंकारनाथ. (2016). भारतीय संस्कृति और शिक्षा दर्शन. वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन।

•